



0755CH12

द्वादशः पाठः  
**विद्याधनम्**



न चौरहार्यं न च राजहार्यं  
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।  
व्यये कृते वर्धते एव नित्यं  
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥ 1 ॥

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्  
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः ।  
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता  
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्या-विहीनः पशुः ॥ 2 ॥

केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला  
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः ।  
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते  
क्षीयन्ते खिलभूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ 3 ॥

विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयः  
धेनुः कामदुधा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं च सा ।  
सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणम्  
तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरु ॥ 4 ॥

## ◆ शब्दार्थः ◆

|  |  |                              |
|--|--|------------------------------|
| <b>चौरहार्यम्</b>                                      | - चोरों के द्वारा चुराने योग्य                             | to be stolen by a thief      |
| <b>राजहार्यम्</b>                                      | - राजा के द्वारा छीनने योग्य                               | to be attacked by a king     |
| <b>भ्रातृभाज्यम्</b>                                   | - भाइयों के द्वारा बाँटने योग्य                            | to be divided among brothers |
| <b>भारकारि</b>   | - भार बढ़ाने वाली  | burden                       |
| <b>प्रच्छन्नगुप्तम्</b>                                | - अत्यन्त गुप्त  | hidden                       |
| <b>भोगकरी</b>  | - भोग का साधन उपलब्ध कराने वाली                            | giving objects of pleasure   |
| <b>परा</b>   | - सबसे बड़ी  | the greatest                 |
| <b>राजसु</b>   | - राजाओं में   | among kings                  |
| <b>केयूराः</b>   | - बाजूबन्द   | bracelets                    |
| <b>चन्द्रोज्ज्वला</b><br>(चन्द्र+उज्ज्वला)             | - चन्द्रमा के समान चमकदार                                  | as bright as the moon        |
| <b>विलेपनम्</b>  | - शरीर पर लेप करने योग्य सुगन्धित-द्रव्य (चन्दन, केसर आदि) | anointing                    |
| <b>नालङ्कृता</b><br>(न+अलङ्कृता)                       | - नहीं सजाया हुआ   | undecorated                  |
| <b>मूर्धजा:</b>  | - वेणी, चोटी   | plait (hair)                 |
| <b>वाण्येका</b> (वाणी+एका)                             | - एकमात्र वाणी   | speech alone                 |
| <b>समलङ्घरोति</b>                                      | - अच्छी तरह सुशोभित करती है                                | decorates                    |
| <b>संस्कृता</b>  | - संस्कारयुक्त (परिष्कृत)                                  | well cultured                |
| <b>धार्यते</b>   | - धारण की जाती है  | is borne                     |
| <b>क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि</b><br>(क्षीयन्ते+अखिलभूषणानि) | - सम्पूर्ण आभूषण नष्ट हो जाते हैं                          | all ornaments perish         |



## रुचिरा - द्वितीयो भागः

**भाग्यक्षये**

- अच्छे दिन बीत जाने पर when good days end

**आश्रयः**

- सहारा helper

**कामदुधा**

- इच्छानुसर फल देने वाली yielding all desired objects

**सत्कारायतनम्**

storehouse of respects

**रत्नैर्विना**

without jewells

**विद्याधिकारम्**

mastery over learning

**तस्मादन्यमुपेक्ष्य**

therefore giving up

(तस्मात्+अन्यम्+उपेक्ष्य)

others



## अभ्यासः

1. उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्', अनुपयुक्तकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

(क) विद्या राजसु पूज्यते।

(ख) वाग्भूषणं भूषणं न।

(ग) विद्याधनं सर्वधनेषु प्रधानम्।

(घ) विदेशगमने विद्या बन्धुजनः न भवति।

(ङ) सर्वं विहाय विद्याधिकारं कुरु।

2. अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं, विभक्तिं वचनञ्च लिखत-

**पदानि**

**लिङ्गम्**

**विभक्तिः**

**वचनम्**

नरस्य

.....

.....

.....

|          |       |       |       |
|----------|-------|-------|-------|
| गुरुणाम् | ..... | ..... | ..... |
| केयूरा:  | ..... | ..... | ..... |
| कीर्तिम् | ..... | ..... | ..... |
| भूषणानि  | ..... | ..... | ..... |

### 3. श्लोकांशान् योजयत-

क

विद्या राजसु पूज्यते न हि धनम्  
 केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषम्  
 न चौरहार्यं न च राजहार्यम्  
 सत्कारायतनं कुलस्य महिमा  
 वाण्येका समलङ्घरोति पुरुषम्

ख

हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः।  
 न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।  
 या संस्कृता धार्यते।  
 विद्या-विहीनः पशुः।  
 रत्नैर्विना भूषणम्।

### 4. एकपदेन प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) कः पशुः?

(ख) का भोगकरी?

(ग) के पुरुषं न विभूषयन्ति?

(घ) का एका पुरुषं समलङ्घरोति?

(ङ) कानि क्षीयन्ते?

### 5. रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) विद्याविहीनः नरः पशुः अस्ति।

(ख) विद्या राजसु पूज्यते।



## रुचिरा - द्वितीयो भागः

(ग) चन्द्रोज्ज्वलाः हाराः पुरुषं न अलङ्कुर्वन्ति।

(घ) पिता हिते नियुड्कते।

(ङ) विद्याधनं सर्वप्रधानं धनमस्ति।

(च) विद्या दिक्षु कीर्ति तनोति।

### 6. पूर्णवाक्येन प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) गुरुणां गुरुः का अस्ति?

(ख) कीदृशी वाणी पुरुषं समलङ्घरोति?

(ग) व्यये कृते किं वर्धते?

(घ) भाग्यक्षये आश्रयः कः?

### 7. मञ्जूषातः पुँलिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्गपदानि चित्वा लिखत-

विद्या धनम् संस्कृता सततम् कुसुमम् मूर्धजाः पशुः गुरुः रतिः

| पुँलिङ्गम् | स्त्रीलिङ्गम् | नपुंसकलिङ्गम् |
|------------|---------------|---------------|
| यथा- हाराः | अलङ्कृता      | भूषणम्        |
| .....      | .....         | .....         |
| .....      | .....         | .....         |
| .....      | .....         | .....         |